# एड्स मोर्चे पर बॉलीवुड भी

लिया टरह्यून

फ़िल्म निर्देशक मीरा नैयर

किम गिबोनो © ए.पी.: डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

भारतीय सिनेमा दर्शकों को जल्द ही सिनेमाघरों में अपनी पसंदीदा बॉलीवुड फ़िल्म देखने से पहले एचआईवी-एड्स के प्रभावों के बारे में भारत के नामी निर्देशकों द्वारा बनाई गई लघु फ़िल्में देखने का मौका मिलेगा। एचआईवी-एड्स के बारे में जागरूकता के लिए फ़िल्म निर्माताओं को जुटाने का यह आइडिया भारतीय फ़िल्म निर्देशक मीरा नैयर का है और इसके लिए धन उपलब्ध कराया है बिल और मेलिंडा गेट्स फ़ाउंडेशन ने।

मीरा नैयर कहती हैं कि जब उनका संपर्क फ़ाउंडेशन की एक प्रतिनिधि से हुआ और उन्हें पता चला कि ''यदि भारत में एड्स के प्रति अज्ञानता और एचआईवी से जुड़े पूर्वाग्रह और अन्य बातों का सिलसिला चलता रहा तो कुछ सालों में ही भारत में एचआईवी-एड्स का प्रकोप अफ्रीका जितना हो सकता है, तो मुझे यह आइडिया सूझा।''

मीरा नैयर अंशकालीन तौर पर उगांडा में रहती हैं। वह एड्स की समस्या से अच्छी तरह परिचित हैं। संयुक्त राष्ट्र के आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2006 में विश्व भर में एड्स से मारे गए 26 लाख लोगों में से 72 फ़ीसदी अफ्रीका के सहारा से निचले वाले इलाकों में से थे। वहां इस बीमारी का जबर्दस्त सामाजिक-आर्थिक असर पड़ रहा है।

वह चाहती हैं कि भारतीय सिनेमा की जबर्दस्त ताकत का इस्तेमाल लोगों में एड्स के प्रति जागरूकता फैलाने में करें। उन्होंने इस इस परियोजना को ''एड्स जागो'' नाम दिया है। उनका आइडिया है कि वह नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल कर विज्ञापन फ़िल्में बनाएंगी जिनसे भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोकप्रिय फ़िल्म निर्देशक जुड़े होंगे जो इन फ़िल्मों में नामी फ़िल्म कलाकारों को लेंगे और हर कलाकार एड्स जागरूकता के लिए 15 मिनट तक अपनी बात कहेगा।

सुश्री नैयर ने हर निर्देशक को एक एड्स विषय का ज़िम्मा दिया है और ''उन्हें अपने काम को ज़रूरत के हिसाब से करने की आज़ादी दी गई है।'' वह खुद सलाम बॉम्बे, मानसून वेडिंग और नेमसेक जैसी फ़िल्में बना चुकी हैं और जानीमानी और प्रतिष्ठित निर्देशक हैं।

उन्होंने चार फ़िल्मों के लिए अच्छी प्रतिभाएं जुटाईं। वह कहती हैं, ''मैंने उन निर्देशकों को चुना जिनकी मैं बेहद प्रशंसा करती हूं।'' उनके अनुसार, ''विशाल भारद्वाज की फ़िल्म *ब्लड ब्रदर्स* इस संक्रमण के मनोवैज्ञानिक प्रभाव और ''इसके साथ सकारात्मक तरीके से रहने'' के बारे में है। वर्ष 1998 में अपनी फ़िल्म *टेररिस्ट* के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा पाने वाले दक्षिण भारतीय निर्देशक संतोष सिवन ने एचआईवी एड्स के प्रति पूर्वाग्रह पर ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने एक ऐसे बच्चे की सच्ची कथा को दिखाया है जिसे स्कूल में नहीं पढ़ने दिया गया क्योंकि उसके माता-पिता एचआईवी संक्रमण के शिकार थे। फरहान अख्तर एक फ़िल्म की शूटिंग कर रहे हैं जिसमें यौन शिक्षा और एचआईवी-एड्स के प्रति खुलेपन की ज़रूरत का संदेश दिया गया है।

सुश्री नैयर ने खुद एक फ़िल्म *माइग्रेशन* निर्देशित की है। उनके अनुसार, ''एचआईवी संक्रमण छोटे-बड़े में भेद नहीं करता। यह ग्रामीण और शहरी, उच्च वर्ग और कामगार वर्ग सभी में बराबर तरीके से फैल सकता है।

इन फ़िल्मों में नामी कलाकार जैसे इरफ़ान खान, सिद्धार्थ और दक्षिण भारतीय कलाकार प्रभु देवा आदि को लिया गया है। समीरा रेड्डी, शाइनी आहूजा और राइमा सेन जैसे उभरते कलाकार भी इनमें हैं। नैयर द्वारा बनाई गई जागरूकता फ़िल्म *शृंखला* और मानवाधिकार समूह ब्रीकथ्रू द्वारा चलाए जा रहे मल्टीमीडिया प्रचार इज दिस जस्टिस एड्स से जुड़े भेदभाव को अपना लक्ष्य बनाता है। ऐसे कार्यक्रम जागरूकता संदेश को लोगों तक पहुंचाने का काम करते हैं।

वह कहती हैं, ''इन्हें कहीं भी अनुवाद कर इस्तेमाल किया जा सकता है। यदि ये चारों फ़िल्में सफल रहती हैं तो अगले साल चार नए निर्देशकों के साथ मिलकर अगली फ़िल्म शृंखला तैयार की जाएगी।''

*लिया टरह्यून यूएसइनफ़ो की कार्यालय लेखिका हैं। वह स्पैन की संपादक रही हैं।*

## विश्व एड्स दिवस

1 दिसंबर को मनाए जाने वाले विश्व एड्स दिवस का विषय ''लीडरशिप'' रखा गया जिसका चयन 'वर्ल्ड एड्स कैंपेन' ने एम्सटर्डम, नीदरलैंड्स में किया।

इस अभियान (www.worldaidscampaign.info) के अनुसार, ''परिवारों, समुदायों, देशों और अंतरराष्ट्रीय, यानी हर स्तर पर इस महामारी पर विजय पाने के लिए नेतृत्व की भावना प्रदर्शित की जानी चाहिए। सबल और समर्पित नेतृत्व से एचआईवी के नियंत्रण में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।''

## भारत में एचआईवी/एड्स

नए आंकड़ों से पता लगा है कि हालांकि भारत में अभी भी एचआईवी/एड्स की महामारी बड़े पैमाने पर फैली हुई है लेकिन पिछले अनुमानों की तुलना में इसका प्रकोप कम है। करीब 24,70,000 भारतीय लोगों में इसके विषाणु मौजूद हैं।

- 15-49 उम्र के 0.28 प्रतिशत वयस्क एचआईवी से संक्रमित हैं, जिसमें से 0.35 प्रतिशत शहरी और 0.25 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में हैं।
- महिलाओं की तुलना में पुरुषों के एचआईवी पॉजिटिव होने की संभावना अधिक रहती है।
- एचआईवी की व्यापकता मणिपुर (राज्य में वयस्कों की कुल संख्या का 1.13 प्रतिशत) तथा आंध्र प्रदेश (राज्य में वयस्कों की कुल संख्या का 0.97 प्रतिशत) में विशेष रूप से अधिक है।
- भारत में 61 प्रतिशत महिलाओं और 84 प्रतिशत पुरुषों ने एड्स के बारे में सुना है (शहरी क्षेत्रों में क्रमश: 83 प्रतिशत तथा 95 प्रतिशत)।
- भारत की तुलना में केवल दक्षिण अफ्रीका और नाइजीरिया में अधिक लोग एड्स से पीड़ित हैं।

*स्रोत: राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार।*

हेमंत भटनागर